



# एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 01, अंक: 02 (मई-जून, 2021)

[www.agriarticles.com](http://www.agriarticles.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

## अनार की बढ़ती हुई मांग

(\*आत्मा राम मीणा<sup>1</sup>, सुमन मीणा<sup>2</sup> एवं मुकेश नागर<sup>3</sup>)

<sup>1</sup>स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान-334006

<sup>2</sup>श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान-303329

<sup>3</sup>केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर, राजस्थान-334006

\*[meenaatm3737@gmail.com](mailto:meenaatm3737@gmail.com)

अनार की खेती गर्म प्रदेशों में आसानी से की जा सकती है। भारत में अनार की खेती अधिकतर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और गुजरात में होती है। अनार का पौधा 3 से 4 साल में फल देने लग जाता है और अनार का पेड़ 20-25 साल तक फल देता है।

### वानस्पतिक विवरण

अनार एक आकर्षक झाड़ीदार (6 या 10 मीटर) ऊँचा, बहुत अधिक, अधिक या कम चमकदार, और बहुत लंबे समय तक रहने वाला पौधा है। पत्तियाँ सदाबहार या पर्णपाती, विपरीत या 5 या 6, छोटी तने वाली, आयताकार-लांसोलेट, 3/8 से 4 इंच (1-10 सेमी) लंबी, चमड़े जैसी होती हैं। दिखावटी फूल एक साथ या एक समूह में 5 के रूप में शाखा सुझावों पर होते हैं। वे 1 1/4 (3 सेमी) चौड़े होते हैं और मोटे, ट्यूबलर, लाल कैलेक्स की विशेषता वाले होते हैं जिनमें 5 से 8 मांसल, नुकीले सेपल्स होते हैं, जिनसे एक फूलदान बनता है, जिसमें 3 से 7 सिकुड़े हुए, लाल, सफेद या रंग-बिरंगी पंखुड़ियाँ उभरती हैं। कई पुंकेसर लगभग गोल, लेकिन प्रमुख कैलेक्स द्वारा आधार पर ताज, फल, 2 1/2 से 5 (6.25-12.5 सेमी) चौड़ा, सख्त, चमड़े की त्वचा या छिलका होता है, मूल रूप से हल्के या गहरे रंग के साथ अधिक पीला होता है गुलाबी या अमीर लाल, आंतरिक झिल्लीदार दीवारों और सफेद स्पंजी ऊतक (चीर) को अलग-अलग डिब्बों में विभाजित किया जाता है, जो कि पारदर्शी थैलियों से भरा होता है, जो तीखा, सुगंधित, मांसल, रसदार, लाल, गुलाबी या सफेद रंग का गूदा (तकनीकी रूप से अरिल) से भरा होता है। प्रत्येक थैली में एक सफेद या लाल, कोणीय, मुलायम या कठोर बीज होता है। बीज पूरे फल के वजन का लगभग 52% प्रतिनिधित्व करते हैं।

### पोषक तत्वों का महत्व

अनार से हम सभी परिचित हैं। यह लगभग हमेशा मिलने वाला लाभदायक फल है। यह बीमारी के कारण होने वाली कमजोरी दूर करता है तथा पाचन क्रिया को स्वस्थ बनाये रखता है। इसे दाड़िम भी कहते हैं। अनार के नाम से कहावत भी मशहूर है “एक अनार सौ बीमार”। इसके लाल दाने जितने दिखने में तो

सुन्दर होते है उतने ही लाभदायक भी होते हैं। दानों का उपयोग किसी भी डिश को सजाने के लिए किया जा सकता है। अनार के दाने पर बाहर रस होता है तथा अंदर कड़क बीज होता है। इसका दाना बीज सहित खाया जा सकता है। अनार के रस का उपयोग भी बहुत लाभदायक होता है। अनार में विटामिन C, विटामिन A, विटामिन K, फोलिक एसिड (आयरन), मैग्नेशियम, पोटेशियम, फास्फोरस, और विटामिन बी काम्प्लेक्स प्रचुर मात्रा में होते है। अनार में प्यूनिकेलेजिन नामक ताकतवर एंटीऑक्सिडेंट होता है जो फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से बचाता है। जिससे हृदय रोग तथा कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा कम होता है। इसके अलावा अनार दानों में प्यूनिसिक एसिड नामक तत्व भी हृदय रोग से बचाने में सहायक होता है। अनार शरीर को ऐसे नाइट्रेट देता है जो शारीरिक शक्ति में बढ़ोतरी करते हैं। अनार में पाए जाने वाले फीटो केमिकल्स ब्लड प्रेशर को कम करने में सहायक होते हैं।

### अनार के फायदे

अनार एक ऐसा फल है जिसे रोगी को भी दिया जा सकता है। यह थकान और कमजोरी, चक्कर आना आदि को मिटाता है।

- ✓ खून की कमी दूर करता है।
- ✓ पाचन में सहायक होता है।
- ✓ स्मरण शक्ति, दिमागी शक्ति व चुस्ती फुर्ती बढ़ाता है।
- ✓ जिन बच्चों का विकास सही ढंग से नहीं हो रहा हो या कमजोर बने रहते हो उन्हें नियमित रूप से अनार खिलाने से फायदा होता है।
- ✓ यह दिल के रोगों में गुणकारी होता है।
- ✓ मुँह और गले के रोगों में भी यह बहुत हितकारी होता है।
- ✓ डायबिटीज से होने वाले नुकसान से बचाता है विशेषकर हृदय को।
- ✓ माहवारी के समय होने वाले तनाव और डिप्रेशन को कम करता है। मेनोपॉज़ के बाद होने वाले डिप्रेशन में भी अनार के नियमित सेवन से लाभ होता है।
- ✓ अनार रक्त वर्धक होने के साथ रक्त का संचार भी बढ़ाता है।
- ✓ यह आमाशय की जलन, पेशाब की जलन, जी घबराना, खट्टी डकार, ज्यादा प्यास आदि परेशानियों में लाभदायक होता है।
- ✓ तिल्ली और लीवर की कमजोरी, संग्रहणी, उलटी दस्त, आदि अनार खाने से ठीक हो जाते है।
- ✓ अनार शरीर के अम्लीय तत्वों को निकालकर स्किन में निखार पैदा करता है। स्किन को जवान और सुन्दर बनाने के लिए अनार का सेवन जरूर करना चाहिए। नियमित रूप से अनार खाने से स्किन में कभी भी झुर्रियां नहीं होती।
- ✓ फल के साथ ही अनार के पत्ते और अनार का छिलका भी बहुत से घरेलु नुस्खे में काम आते है।

### किस्में

देश में अनार की कई किस्में पाई जाती हैं लेकिन आप अपने क्षेत्र के अनुसार इसका चयन कर सकते हैं, जिसमें उपज करने से अच्छी कमाई हो सके।

- ✓ अरक्ता कंधारी
- ✓ ढोलका जालोर बेदाना
- ✓ ज्योति पेपर सेल
- ✓ भगवा गणेश

✓ रूबी मृदुला

### परागन

अनार कीटों द्वारा स्वयं-परागण और पार-परागण दोनों है। पराग का बहुत कम फैलाव होता है। बैगेड फूलों के आत्म-परागण के परिणामस्वरूप 45% फल सेट हुए हैं। क्रॉस-परागण ने उपज को 68% तक बढ़ा दिया है। हेमैफ्रोडाइट फूलों में, 6 से 20% पराग बांझ हो सकते हैं; पुरुष में, 14 से 28%। पराग का आकार और प्रजनन खेती और मौसम के साथ बदलता रहता है।

### जलवायु

अनार के पौधों को अगस्त या फिर फरवरी-मार्च में लगा सकते हैं। इसकी खेती के लिए यह समय उपयुक्त माना जाता है। इसकी खेती सभी प्रकार की मिट्टी में कर सकते हैं। इसके बाद किसानों को लगभग 3 से 4 साल बाद पेड़ फल देने लगता है। अनार की खेती की खास बात है कि इसमें एक बार निवेश करने से सालों तक लाभ कमा सकते हैं।

### भूमि एवं तैयारी

अनार क्षारीय, क्षारीय मिट्टी और गहरे, अम्लीय दोमट और इन चरम सीमाओं के बीच मिट्टी की एक विस्तृत श्रृंखला पर पनपती है। उत्तरी भारत में, यह रॉकस्ट्रेवन बजरी पर सहज है।

### अनार के पौधे के रोपण का समय

अनार के बीज आसानी से अंकुरित होते हैं, यहां तक कि जब केवल ढीली मिट्टी की सतह पर फेंक दिया जाता है और अंकुर वसंत के साथ ऊपर उठता है। हालांकि, अंकुर भिन्नता से बचने के लिए, चयनित कलियों को आमतौर पर 10 से 20 (25-50 सेमी) लंबे दृढ़ लकड़ी के कटिंग के माध्यम से पुनः प्रस्तुत किया जाता है। 50 पीपीएम के साथ उपचार। इंडोल-ब्यूटिरिक एसिड और 15.95% की नमी के स्तर पर रोपण, जड़ विकास और अस्तित्व को बढ़ाता है। कटिंग को 1 वर्ष के लिए मिट्टी के ऊपर 1 या 2 कलियों के साथ बिस्तरों में सेट किया जाता है, और फिर खेत में प्रत्यारोपित किया जाता है। ग्राफ्टिंग कभी सफल नहीं रही है, लेकिन शाखाओं को एयर-लेयर किया जा सकता है और एक मूल पौधे से चूसने वाले को ऊपर ले जाया जा सकता है और प्रत्यारोपण किया जा सकता है। अगर किसान अनार की खेती कर रहे हैं तो पौधा रोपण से लगभग 1 महीना पहले गड्डे खोद लें, ध्यान रहे कि ये गड्डे लगभग 60 सेमी लंबे, 60 सेमी चौड़े और 60 सेमी गहरे होने चाहिए साथ ही इनकी सामान्यतः दूरी 4 से 5 मीटर की होनी चाहिए। अब गड्डों को लगभग 15 दिनों तक खुला छोड़ दें। इसके बाद लगभग 20 किग्रा पकी हुई गोबर की खाद, 1 किग्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट, 0.50 ग्राम क्लोरो पायरीफास का चूर्ण तैयार कर इन सभी को गड्डों की सतह से 15 सेमी ऊंचाई तक भर दें।

### सिंचाई

अनार एक सूखी फसल है इसलिए इसकी ज्यादा उपज पाने के लिए सिंचाई करना ज़रूरी माना जाता है। इसकी खेती अगर गर्मियों में कर रहे हैं तो लगभग 5 से 7 दिनों बाद सिंचाई कर देनी चाहिए। अगर सर्दियों का मौसम है, तो लगभग 10 से 12 दिनों में सिंचाई कर देनी चाहिए, ध्यान रहे कि इसके पौधों के लिए बूंद-बंद सिंचाई अच्छी मानी जाती है।

### रोग और कीट

अनार की तितली, विराकोला आइसोक्रेट्स, फूल-कलियों पर अंडे देता है और विकासशील फलों के कैलेक्स; कुछ दिनों में कैटरपिलर कैलेक्स के माध्यम से फल में प्रवेश करता है। जब तक फूलों को 2 से 30 दिन अलग-अलग छिड़काव नहीं किया जाता है तब तक ये फल बोरर्स पूरी फसल को नुकसान पहुंचा सकते हैं। एक स्टेम बोरर कभी-कभी शाखाओं के माध्यम से छेद बनाता है। ट्विग डाइबैक, प्लूरोप्लाकोनेमा या सेथुथोस्पोरा फाइलोस्टिक्टा के कारण हो सकता है। एस्परगिलस कैस्टेनियस द्वारा संक्रमण के परिणामस्वरूप फलों और बीजों का निर्वहन। फलों को कभी-कभी स्पैसेलोमा पुनीके द्वारा खंडित किया जा सकता है। फोमोप्सिस सपा से सूखी सड़ांध या ज़ाइटिया वर्सियाना, फसल के 80% तक नष्ट कर सकता है जब तक कि इन जीवों को उचित छिड़काव उपायों द्वारा नियंत्रित नहीं किया जाता है। पकने के मौसम में अत्यधिक बारिश नरम सड़ांध पैदा कर सकती है। अल्टरनेरिया सोलानी की वजह से 1974 में कटाई के बाद की सड़न भारत में देखी गई थी। यह विशेष रूप से फटा हुआ फल है।

माइनर समस्याएं पर्कोस्पोरा, ग्लियोस्पोरियम और पेस्टलोटिया स्प; व्हाइटफ़ायर, थ्रिप्स, माइलबग्स और स्केल कीटों द्वारा भी पर्ण क्षति; और यूप्रोक्टिस एसपीपी द्वारा मलत्याग और आर्कियोफोरा दन्तुला दीमक ट्रंक को संक्रमित कर सकती है। भारत में, बोरर्स, पक्षियों, चमगादड़ों और गिलहरियों से बचाने के लिए फलों पर कागज या प्लास्टिक की थैलियाँ या अन्य आवरण डाले जा सकते हैं।

#### पौधों को रोगों से बचाएं

अनार के पौधों में सड़ने वाले कीड़े लगने का खतरा बना रहता है। इसके लिए पौधों पर कीटनाशक का छिड़काव करें। साथ ही पौधों के आस-पास साफ-सफाई रखें। अगर सर्दियों का मौसम है तो पौधों को पाले से बचाएं, इसके लिए गंधक का तेज़ाब छिड़कते रहें।

#### फलों की तुड़ाई

अनार की खेती में पेड़ से फल तभी तोड़ना चाहिए, जब फल पूरे तरीके से पक जाएं। बता दें कि लगभग 120 से 130 दिनों बाद फल तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

#### एक पेड़ से मिलते हैं इतने फल

अनार की खेती में अच्छी देखभाल और उन्नत प्रबन्धन अपनाने से एक पेड़ से लगभग 80 किलो फल मिल सकते हैं। ध्यान दें कि पौधों के बीच की दूरी कम होनी चाहिए, जिससे पौधे लगाने से प्रति हेक्टेयर लगभग 4800 क्विंटल तक फल मिल सकें, ऐसे में एक हेक्टेयर से 8 से 10 लाख रुपए सालाना कमाया जा सकता है। यह कम लागत में ज्यादा लाभ कमाने का आसान तरीका है।

Estd. 2021